

पाठ्यचर्या डिजाइनिंग (Curriculum Designing)

प्रस्तावना

शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को जानकारी देना नहीं है, बल्कि उनके ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण, मूल्यों और व्यक्तित्व का समग्र विकास करना है। इन उद्देश्यों को व्यवस्थित रूप से प्राप्त करने के लिए ऐसी पाठ्यचर्या आवश्यक होती है जो विद्यार्थियों, समाज और बदलती परिस्थितियों की आवश्यकताओं के अनुरूप हो। पाठ्यचर्या को निर्धारित उद्देश्यों के अनुसार व्यवस्थित रूप देने की प्रक्रिया को पाठ्यचर्या डिजाइनिंग कहा जाता है।

1. पाठ्यचर्या डिजाइनिंग का अर्थ

पाठ्यचर्या डिजाइनिंग (Curriculum Designing) वह व्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत यह निर्धारित किया जाता है कि विद्यार्थियों को क्या पढ़ाया जाए, क्यों पढ़ाया जाए, किस क्रम में पढ़ाया जाए, किस प्रकार पढ़ाया जाए और सीखने के परिणामों का मूल्यांकन कैसे किया जाए।

सरल शब्दों में, शैक्षिक उद्देश्यों, विषय-वस्तु, शिक्षण-अधिगम अनुभवों और मूल्यांकन को उचित रूप से व्यवस्थित करना पाठ्यचर्या डिजाइनिंग कहलाता है।

2. पाठ्यचर्या डिजाइनिंग की आवश्यकता

1. शिक्षा के उद्देश्यों को स्पष्ट करने के लिए।
2. विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार विषय-वस्तु निर्धारित करने के लिए।
3. शिक्षण को व्यवस्थित और उद्देश्यपूर्ण बनाने के लिए।
4. विद्यार्थियों में आवश्यक ज्ञान एवं कौशल विकसित करने के लिए।
5. समाज की बदलती आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा प्रदान करने के लिए।
6. शिक्षण और मूल्यांकन में उचित समन्वय स्थापित करने के लिए।

3. पाठ्यचर्या डिजाइनिंग के प्रमुख तत्व

(1) शैक्षिक उद्देश्य

सबसे पहले यह निर्धारित किया जाता है कि पाठ्यचर्या के माध्यम से विद्यार्थियों में कौन-से ज्ञान, कौशल, मूल्य और व्यवहार विकसित किए जाने हैं।

(2) विषय-वस्तु का चयन

उद्देश्यों के अनुसार उपयोगी, प्रासंगिक और वैज्ञानिक विषय-वस्तु का चयन किया जाता है।

(3) विषय-वस्तु का संगठन

चयनित विषय-वस्तु को सरल से कठिन, ज्ञात से अज्ञात और सामान्य से विशिष्ट क्रम में व्यवस्थित किया जाता है।

(4) शिक्षण-अधिगम अनुभव

विद्यार्थियों को केवल व्याख्यान तक सीमित न रखते हुए चर्चा, समूह कार्य, प्रायोगिक कार्य, परियोजना, क्षेत्रकार्य आदि के अवसर दिए जाते हैं।

(5) शिक्षण विधियाँ

विषय और विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार व्याख्यान, चर्चा, समस्या-समाधान, प्रदर्शन, परियोजना आदि विधियों का चयन किया जाता है।

(6) मूल्यांकन

यह देखा जाता है कि निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों को विद्यार्थी किस सीमा तक प्राप्त कर पाए हैं। इसके लिए परीक्षा, असाइनमेंट, प्रोजेक्ट, प्रस्तुति और अन्य मूल्यांकन विधियों का प्रयोग किया जा सकता है।

4. पाठ्यचर्या डिजाइनिंग की प्रक्रिया

चरण 1 – आवश्यकताओं का निर्धारण

सबसे पहले विद्यार्थियों, समाज, रोजगार और विषय की आवश्यकताओं का अध्ययन किया जाता है।

चरण 2 – उद्देश्यों का निर्धारण

आवश्यकताओं के आधार पर पाठ्यचर्या के स्पष्ट और प्राप्त करने योग्य उद्देश्य निर्धारित किए जाते हैं।

चरण 3 – विषय-वस्तु का चयन

निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपयुक्त विषय-वस्तु का चयन किया जाता है।

चरण 4 – विषय-वस्तु का संगठन

चयनित विषयों को तार्किक एवं क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित किया जाता है।

चरण 5 – शिक्षण-अधिगम गतिविधियों का निर्धारण

विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से सीखने के अवसर देने वाली गतिविधियों और शिक्षण विधियों का चयन किया जाता है।

चरण 6 – संसाधनों का निर्धारण

पाठ्यचर्या को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए शिक्षक, पुस्तकें, प्रयोगशाला, डिजिटल संसाधन, क्षेत्रकार्य आदि आवश्यक संसाधनों का निर्धारण किया जाता है।

चरण 7 – मूल्यांकन की योजना

सीखने के परिणामों को मापने के लिए उचित मूल्यांकन पद्धति निर्धारित की जाती है।

चरण 8 – कार्यान्वयन एवं सुधार

पाठ्यचर्या को लागू करने के बाद उसके परिणामों का अध्ययन किया जाता है और आवश्यकता के अनुसार उसमें संशोधन किया जाता है।

5. अच्छी पाठ्यचर्या डिजाइनिंग की विशेषताएँ

उद्देश्यपूर्ण हो।

विद्यार्थी-केंद्रित हो।

समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप हो।

विषय-वस्तु प्रासंगिक एवं उपयोगी हो।

सिद्धांत और व्यवहार में समन्वय हो।

लचीली एवं परिवर्तनशील हो।

विद्यार्थियों के समग्र विकास पर ध्यान दे।

शिक्षण और मूल्यांकन में समन्वय हो।

स्थानीय आवश्यकताओं के साथ व्यापक सामाजिक आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखे।

समय-समय पर मूल्यांकन और संशोधन की व्यवस्था हो।

6. पाठ्यचर्या डिजाइनिंग का महत्व

पाठ्यचर्या डिजाइनिंग शिक्षा को दिशा और उद्देश्य प्रदान करती है। इसके माध्यम से—

1. शिक्षा के लक्ष्यों को स्पष्ट किया जाता है।

2. विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण किया जाता है।

3. ज्ञान और व्यावहारिक कौशल का विकास होता है।

4. रोजगार एवं व्यावसायिक आवश्यकताओं के अनुरूप क्षमता विकसित की जाती है।

5. सामाजिक मूल्यों और जिम्मेदारियों का विकास होता है।

6. शिक्षण प्रक्रिया अधिक व्यवस्थित और प्रभावी बनती है।

7. बदलती सामाजिक एवं तकनीकी परिस्थितियों के अनुसार पाठ्यचर्या में सुधार किया जा सकता है।

निष्कर्ष

पाठ्यचर्या डिजाइनिंग एक निरंतर और व्यवस्थित प्रक्रिया है। इसमें केवल विषयों का चयन ही नहीं किया जाता, बल्कि शैक्षिक उद्देश्यों, विषय-वस्तु, शिक्षण-अधिगम अनुभव, संसाधनों और मूल्यांकन को एक-दूसरे से जोड़कर व्यवस्थित किया जाता है। एक प्रभावी पाठ्यचर्या ऐसी होनी चाहिए जो विद्यार्थी की आवश्यकताओं, समाज की अपेक्षाओं और भविष्य की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए उसके ज्ञान, कौशल, मूल्यों और व्यक्तित्व के समग्र विकास में सहायता करे।